

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७०

नित नवल आशीष अनचिन्हार

७०

आशीष अनचिन्हार

विदेह | आलोचना-संस्करण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक
सम्पादकीय

खण्ड-७०

‘नित नवल आशीष अनचिन्हार’ : चौदह पोथीक
स्वतन्त्र समेकित समालोचना

समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार

विदेह • २०२६

साहित्यिक समीक्षा आ सम्पादकीय विवेचन

प्रकाशन-विवरण

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय — खण्ड ७०। समीक्षक आ सम्पादक : आशीष अनचिन्हार।

समीक्षाधीन पोथी : गजेन्द्र ठाकुर। ‘नित नवल आशीष अनचिन्हार : चौदह पोथीक समेकित साहित्यिक आलोचना’। २०२६।

प्रथम प्रकाशन : २०२६। भाषा : मैथिली। मुद्रण-विन्यास : ६ × ९ इञ्च।

© २०२६ गजेन्द्र ठाकुर / प्रीति ठाकुर। सर्वाधिकार सुरक्षित।

सम्पादकीय भूमिका

समीक्षाक मूल पुस्तक चौदह पोथीक चारि विषयगत क्षेत्र—सम्पादन आ साहित्यिक स्मृति, गजल-सृजन, गजलशास्त्र आ डिजिटल पत्रकारिता—पर केन्द्रित अछि। एहि खण्डमे मूल पोथीक सम्पूर्ण पाठ दोहराओल नहि गेल; ओकर आलोचनात्मक विधि, साक्ष्यक प्रयोग, उपलब्धि आ सीमा अलग परखल गेल अछि।

एहि खण्डक समीक्षक-सम्पादक स्वयं समीक्षाधीन कतेको कृतिक लेखक अथवा सम्पादक छथि। एहि आत्म-संलग्नताकें स्वीकार करैत स्रोतक कथन, गजेन्द्र ठाकुरक व्याख्या आ एहि पुनर्पाठक निर्णयकें एक-दोसरासँ पृथक रखबाक प्रयास कएल गेल अछि।

मूल चौदह पोथीक स्वतन्त्र सम्पूर्ण परीक्षण अथवा वेब-अभिलेखक नूतन सत्यापनक दावा एहि संस्करणमे नहि कएल गेल अछि। प्रकाशित आलोचनाक आलोचना एहि खण्डक स्वाभाविक सीमा आ उद्देश्य दुनू अछि।

विस्तृत अनुक्रमणिका : खण्ड ७०

01. चौदह पोथीक समेकित आलोचना : पाठ-परिधि आ प्रयोजन.....	5
02. समीक्षाक समीक्षा : आत्मीयता, सहभागिता आ प्रमाणक प्रश्न.....	6
03. 'नबोनारायण मिश्र समग्र' : साहित्यकेँ सम्भव बनबयवला श्रम.....	6
04. 'स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर' : व्यक्ति आ व्यक्तित्वक निर्माण.....	7
05. 'गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा' : चयन, संस्था आ कथा-वस्तु.....	8
06. 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय' : समग्रता आ आत्मप्रतिबिम्ब.....	9
07. 'प्रीति कारण सेतु बान्हल' : स्मृति, चित्रकथा आ सेतुक रूपक.....	9
08. 'सेतुषाम : Vibrant Maithili' : प्रतिनिधित्व आ सांस्कृतिक सार्वजनिकता.....	10
09. 'अनचिन्हार आखर' : गजल, रुबाइ आ कताक अलग स्वरूप.....	11
10. 'जंघाजोड़ी' : छन्दक कठोरता आ व्यङ्ग्यक जोखिम.....	12
11. 'कुमारि इच्छा' : स्त्री-अनुभूति, भूख आ छन्दक दाबी.....	12
12. 'मैथिली गजलक रेडी रेकोनर' : अभ्यास-पुस्तकक मर्यादा.....	13
13. 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' : विधान इतिहासकेँ कोना चुनैत अछि.....	14
14. 'सन्दर्भ सहित' : आलोचनात्मक न्याय आ विधागत सीमा.....	15
15. 'शब्द-अर्थ-शक्ति' : रूपक परीक्षण आ अर्थक अपूर्ण विस्तार.....	15
16. 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास' : 'पहिल'क दाबी आ डिजिटल प्रमाण.....	16
17. सम्पादन आ सांस्कृतिक स्मृति : संरक्षणक भीतर चयन.....	17
18. कथा-समीक्षा : पाठक बहुअर्थिता आ सामाजिक न्याय.....	18
19. मैथिली गजल : विधानकेँ आवश्यक, पर्याप्त नहि मानब.....	18
20. उच्चारण, बहर आ प्रमाण : परीक्षणक व्यावहारिक रूप.....	19
21. वेब, पत्रिका आ भाषिक सार्वजनिक क्षेत्र : बदलैत माध्यम.....	19

22. चारि विषयगत खण्डक बीच साझा वैचारिक सूत्र.....	20
23. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचनाक उपलब्धि.....	21
24. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचनाक सीमा.....	21
25. आशीष अनचिन्हारक आत्म-संलग्नता : समीक्षकक जिम्मेवारी.....	22
26. आगूक शोध लेल पाठ-सम्पादन आ प्रमाणक कार्यसूची.....	22
27. समेकित निष्कर्ष.....	23
28. आधारग्रन्थ आ पाठ-सीमा.....	24

01. चौदह पोथीक समेकित आलोचना : पाठ-परिधि आ प्रयोजन

गजेन्द्र ठाकुरक 'नित नवल आशीष अनचिन्हार' एकटा लेखक वा एक विधाक सामान्य परिचय नहि, चौदह पृथक पोथीक आलोचनात्मक अन्वेषण थिक। एहि चौदहमे नबोनारायण मिश्रक संकलित रचना, अरविन्द ठाकुरक बहुस्वरीय आलोचना-पोथी, चयनित कथा, सम्पादकीय समग्र, साहित्यिक-सांस्कृतिक अभिनन्दन-संकलन, तीनटा गजल-संग्रह, चारिटा गजलशास्त्रीय अथवा आलोचनात्मक कृति आ मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास उपस्थित अछि। पुस्तक चारि विषयगत खण्डमे व्यवस्थित अछि; ताहि क्रमकें सुरक्षित राखि एहि खण्डमे एक-एक अध्ययनक मूल तर्कक समीक्षा आ चारू खण्डक आपसी सम्बन्धक परीक्षण कएल गेल अछि।

एकर समीक्षाक आधार गजेन्द्र ठाकुरक उपलब्ध २०२६क पाठ अछि। समीक्षाधीन मूल चौदह पोथीक सभ संस्करण, पाण्डुलिपि अथवा बाहरी अभिलेखक स्वतन्त्र परीक्षण एहि खण्डक दायरा नहि अछि। फलतः गजेन्द्रक लेखमे उल्लिखित प्रकाशन-वर्ष, पृष्ठ-संख्या, शेर अथवा ऐतिहासिक प्राथमिकताकें, बिना अलग प्रमाणक, एहि पुनर्पाठक सत्यापित निष्कर्ष नहि मानल गेल अछि। लक्ष्य प्रशंसा अथवा प्रतिवादक एकमुखी ग्रन्थ नहि, प्रमाण आ व्याख्याक बीचक दूरीक एक सजग समालोचना अछि।

एहि पुनर्पाठमे साहित्यिक कृति, सम्पादकीय संकलन, सिद्धान्तक पोथी आ ऐतिहासिक दस्तावेजक कसौटी समान नहि। कथाक मूल्य चरित्र, प्रसंग, कथावाचक आ भाषाक स्तरपर खुलैत अछि; संकलनक मूल्य चयन, पाठ-इतिहास आ प्रतिनिधित्वपर; गजलक मूल्य बहरक संग शेरक अर्थपर; पत्रकारिता-इतिहासक मूल्य दिनांक, माध्यम आ प्रकाशित सामग्रीक प्रमाणपर। गजेन्द्रक समीक्षाक उपयोगिता तखन जाँचल जायत जखन ई भिन्न मापदण्ड अपन-अपन ठाम प्रभावी होथि।

02. समीक्षाक समीक्षा : आत्मीयता, सहभागिता आ प्रमाणक प्रश्न

एहि खण्डक एकटा विशेष सम्पादकीय परिस्थिति अछि। चौदह पोथीमे अनेकक लेखक अथवा सम्पादक स्वयं आशीष अनचिन्हार छथि, आ एहि स्वतन्त्र पुनर्पाठक समीक्षक-सम्पादक सेहो आशीष अनचिन्हार छथि। एहि आत्म-संलग्नताकें छिपाकऽ आलोचनात्मक निष्पक्षताक औपचारिक दावा करब अनुचित होयत। तें एहि ग्रन्थमे ‘गजेन्द्र एहन कहैत छथि’ आ ‘ई पुनर्पाठ एहन प्रश्न उठबैत अछि’—दूनू स्तरकें पृथक राखल गेल अछि। ई स्थिति विषय-वस्तुसँ निकटता दैत अछि, मुदा अपन निर्णयपर आलोचनात्मक नियन्त्रणक अतिरिक्त माँग सेहो करैत अछि।

गजेन्द्रक बहुतेक अध्ययनक महत्त्वपूर्ण गुण अछि जे ओ कृतिक प्रकार, आन्तरिक विन्यास आ पूर्व प्रकाशित सामग्रीक अन्तर चिन्हबाक प्रयास करैत छथि। मुदा एकटा पोथीक विस्तृत अनुक्रमण, ओकर साहित्यिक महत्त्वक स्वतः प्रमाण नहि। प्रत्येक अध्यायक सूची, उद्धृत उदाहरण आ बाहरी सन्दर्भक संख्या आलोचनात्मक निर्णयकें सहारा दैत अछि; स्वयं ओकर स्थान नहि लैत। समीक्षकक उत्तरदायित्व ई स्पष्ट करब अछि जे कोन दाबी प्रत्यक्ष पाठसँ निकलैत अछि, कोन सम्पादकीय कथनपर आधारित अछि, आ कोन निष्कर्ष विश्लेषणक विस्तार रूपमे प्रस्तावित भेल अछि।

03. ‘नबोनारायण मिश्र समग्र’ : साहित्यकें सम्भव बनबयवला श्रम

पहिल समीक्षामे गजेन्द्र ठाकुर नबोनारायण मिश्रक कृतित्वकें साक्षात्कार, आलेख, कथा आ पद्यक चारि तहमे पढ़ैत छथि। तीन साक्षात्कार, पन्द्रह आलेख, एगारह कथा आ उन्नैस पद्यरचनाक गणना कए ओ मैथिली आन्दोलन, कोलकाताक संस्था, पत्रिका-संचालन आ कोकिल मञ्चक रङ्गकर्मकें साहित्यिक इतिहासक योग्य सामग्री मानैत छथि। एहि अध्ययनक उपलब्धि रचनाक पाठक संग ओहि सामूहिक श्रमकें देखब अछि जाहिसँ रचना सार्वजनिक जीवन पबैत अछि। व्यक्तिचित्र आ शोकगीतमे उपस्थित स्मृतिसभ केवल निजी शोक नहि, सांस्कृतिक सम्बन्धक अभिलेख बनि सकैत छथि।

गजेन्द्रक विश्लेषणमे ‘एकटा पाकल आम’क बाल-दृष्टि, ‘आदर्श विवाह’क दहेज-विरोध, ‘युगधर्म’क मौन आ ‘एहनो होइत छै’क दृश्य-हास्य अलग-अलग गुण पबैत अछि। एहि भेदसँ ‘नैतिक कथा’ नामक एकटा सामान्य विशेषण सम्पूर्ण कथा-संसारपर आरोपित होयबासँ बचैत अछि। मुदा लेखकक संस्मरणात्मक भाषा जे सांस्कृतिक आन्दोलनक सहभागितासँ बनल अछि, तकर तथ्य-वाचक दावा, प्रशस्ति आ स्वानुभव अलग सूचीबद्ध भेला बादे अभिलेखीय निष्कर्षक रूपमे ग्रहणीय होयत।

विशेष महत्त्वक प्रश्न साहित्यिक श्रमक दृश्यता अछि। मञ्च बनौनिहार, छापाईक सहयोगी, महिला कलाकार, पाठक आ सम्पादक केहन प्रमाणद्वारा इतिहासमे दर्ज होथि? गजेन्द्र एहि प्रश्नक दिशा सही खोलैत छथि, मुदा संस्थागत दस्तावेजक स्वतन्त्र जाँच लेल जे रास्ता आवश्यक, ओकरा अगिला अनुसंधानक रूपमे छोड़ि दैत छथि। एहि सीमा सहित पहिल समीक्षा ‘समग्र’ शब्दकेँ स्थिर पूर्णताक बदला संरक्षणक चलैत प्रक्रिया रूपमे बुझबैत अछि।

04. ‘स्वतंत्रचेता : अरविन्द ठाकुर’ : व्यक्ति आ व्यक्तित्वक निर्माण

दोसर समीक्षाक केन्द्र एकटा सम्पादित व्यक्तित्व-कृतित्व संकलन अछि, अरविन्द ठाकुरक नव मौलिक कथा अथवा कविता-संग्रह नहि। गजेन्द्र २०१५क विदेह विशेषांक आ २०२०क पुस्तकक बीच सम्पादकीय अन्तर देखबैत छथि : मूल रचनाक किछु हिस्सा हटाएब आ बादक समीक्षा-संस्मरण जोड़ब पुनर्मुद्रणकेँ नव पुस्तकमे बदलैत अछि। एतय पुस्तकक इतिहास स्वयं आलोचनाक विषय अछि। रचनाकारक छवि केवल हुनक लेखनसँ नहि, संकलनमे किनका स्थान भेटल, ककर आलोचना आ ककर आत्मकथन रखल गेल, ताहूसँ बनैत अछि।

कथा, गजल, सामाजिक असहमति, ग्रामीण अनुभव आ लेखकक बौद्धिक व्यक्तित्व सम्बन्धी विविध मत एकत्रित होयब उपलब्धि अछि। तथापि ‘बहुस्वर’ शब्द मात्र संकलनक अनेक लेखकक गणना नहि। मूल्याङ्कनक वास्तविक बहुलता लेल मतभेदक स्थान, प्रतिकूल समीक्षा आ स्रोतसंगत पाठोपस्थिति चाही। स्मृतिक आत्मीय स्वर आ गम्भीर रूपसमालोचनाकेँ एकहि कोटिमे राखि देलासँ संकलन प्रशंसात्मक एकस्वरमे बदलि सकैत

अछि। गजेन्द्र एहि आशंकाकेँ पहिचानैत छथि; हुनक समीक्षाक सार्थकता एहि द्विधाक स्पष्ट बयानमे अछि।

05. 'गजेन्द्र ठाकुरक ८२ टा चयनित कथा' : चयन, संस्था आ कथा-वस्तु

तेसर समीक्षा सर्वाधिक व्यापक कथात्मक सामग्रीपर अछि। गजेन्द्र अपन बयासी चयनित कथाकेँ आशीष अनचिन्हारक सम्पादित पाठक माध्यमसँ पुनः पढ़ैत छथि। चयनक निर्माण दस स्रोत-पोथी वा खण्डसँ भेल बताओल गेल अछि; एहि कारण 'चयनित' शब्द अपनेमे आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। कोन कथा सुरक्षित भेल, कोन छोड़ा गेल, आ चयन क्रमसँ लेखकक साहित्यिक छवि कोना बदलल—ई सभ प्रश्न कृतिक सौन्दर्यक संग पाठ-इतिहासक सेहो अछि।

समीक्षामे ग्रामजीवनक संग कार्यालय, अभिलेखालय, पंचायत, न्यायालय, विद्यालय, श्रम-संस्था आ चिकित्सालयक उल्लेख विषय विस्तारक साक्ष्य रूपमे देल गेल अछि। एहि आधारपर सामाजिक यथार्थकेँ केवल ग्रामीण रूढ़ि मानबाक बदला दस्तावेज, निर्णय आ संस्थागत शक्ति संग सम्बन्धित देखल गेल अछि। मुदा कोनो कथामे कागजक उपस्थिति ओकरा स्वतः आधुनिक दस्तावेजी कथा नहि बनबैत। साहित्यिक प्रभाव तखन सिद्ध होयत जखन वस्तुक उल्लेख, कथानकक मोड़, वाचकक दूरी आ पाठकक अनिश्चितता मिलि अर्थ उत्पन्न करय।

लेखक द्वारा अपनहि कथा-संसारक समीक्षा करबाक स्थितिमे आत्मप्रतिबिम्बक तनाव अछि। गजेन्द्र कतय कथागत अस्पष्टता स्वीकार करैत छथि, कतय अपन आशयकेँ निर्णायक अर्थ बनबैत छथि, एहि अन्तरकेँ देखब आवश्यक अछि। कथा-पात्रक कथन लेखकक नैतिक मतक प्रत्यक्ष अनुवाद नहि; एहि सावधानीकेँ समीक्षा जेकरा ठाम निभबैत अछि, ओतय पाठ खुलैत अछि। मूल अलग संस्करणक पाठभेद नहि जाँचल गेलासँ चयनक भाषा-इतिहास सम्बन्धी अन्तिम निर्णय स्थगित रहबाक चाही।

06. 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय' : समग्रता आ आत्मप्रतिबिम्ब

चारिम समीक्षा एक विशेष वर्तुल बनबैत अछि : आशीष अनचिन्हारक 'गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय' पर स्वयं गजेन्द्र ठाकुरक समालोचना। उपन्यास, कथा, नाटक, पद्य, दर्शन, इतिहास, पञ्जी, व्याकरण, कोश, अनुवाद आ बालसाहित्यक विस्तृत श्रेणी एकहि साहित्यिक परियोजनामे उपस्थित अछि। विधाक ई विस्तार पुस्तकालयी अनुक्रमणक उपलब्धि निश्चय अछि; मुदा वर्गीकरण आ आलोचनात्मक मूल्यबोध एकहि वस्तु नहि। काजक विस्तारक घोषणा जखन साक्ष्य आ नकारात्मक परीक्षणसँ जुड़ैत अछि तखने ओ साहित्येतिहासक उपयोगी प्रतिपादन बनैत अछि।

पुस्तकक भीतरी सम्बन्ध—लोक आ शास्त्र, स्मृति आ अभिलेख, मातृभाषा आ बहुभाषी संवाद—गजेन्द्रक समीक्षामे विशेष महत्त्व पबैत अछि। एहि सम्बन्धकें केवल परस्पर पूरक मानलासँ जटिलता छिपैत अछि; उदाहरणार्थ पञ्जी अभिलेख सामाजिक स्मृति सेहो अछि आ सामाजिक बहिष्करणक सामग्री सेहो बनि सकैत अछि। व्याकरण आ कोशकें रचनाशील साहित्यसँ जोड़ब उपयोगी अछि, मुदा काव्यात्मक मूल्य आ भाषिक संसाधनक उपयोगिता अलग कसौटी माँगैत अछि।

आत्म-सम्बद्ध पुस्तकक विश्लेषणमे 'स्वतन्त्र प्रमाण'क जरूरत बेसी अछि। गजेन्द्रक ई चर्चा आधारभूत कृतिक परिचय आ निर्माण-विचार खोलैत अछि, किन्तु प्रशंसा, लेखकक आत्मव्याख्या आ आलोचकक निर्णय बीच त्रिस्तरीय भेद सदिखन पाठकक सोझाँ रहबाक चाही। एहि प्रश्नसँ अध्ययनक महत्त्व कम नहि, बल्कि ओकर विधागत मर्यादा स्पष्ट होइत अछि।

07. 'प्रीति कारण सेतु बान्हल' : स्मृति, चित्रकथा आ सेतुक रूपक

पाँचम अध्ययनमे गजेन्द्र २०२४क बहुलेखकीय 'प्रीति कारण सेतु बान्हल—Redefining Maithili'क तीन प्रमुख क्षेत्र देखैत छथि : कृपानन्द ठाकुरक व्यक्तिस्मृति, प्रीति ठाकुरक चित्रकथा आ गजेन्द्र ठाकुरक विविध साहित्यिक-सांस्कृतिक काज। शीर्षकक 'सेतु' अतीत-

भविष्य, बालपाठक-लोकपरम्परा, मुद्रित कृति-डिजिटल प्रसार आ निजी स्मृति-सार्वजनिक इतिहासक बीच सम्बन्धक रूपक अछि। मुदा सेतुक निर्माण एक आलोचनात्मक चयन सेहो होइत अछि : ओकरा पार किनका स्थान भेटैत अछि, आ किनकर स्वर ओहि मार्गसँ बाहर रहैत अछि?

चित्रकथाक मूल्यांकनमे कथा-सार, सामाजिक सन्देश आ चित्रक भाषा अलग देखबाक आवश्यक अछि। पात्रक मुद्रा, फ्रेमक क्रम, संवाद-बुलबुला, बालकक दृश्य-गति आ मौखिक आख्यानक रूपान्तरण पाठकें नूतन बनबैत अछि। एहि विधाक स्वतन्त्र शिल्पक परीक्षण बिना चित्रकथाकें केवल बालसाहित्यक ‘सरल संस्करण’ कहब अधूरा होयत। गजेन्द्र एहि दृश्य-रूपक प्रश्न उठबैत छथि, मुदा चित्र-पृष्ठक प्रत्यक्ष तुलनात्मक अध्ययन पाठकक लेल आगूक आवश्यकता रहैत अछि।

एक लेखक परिवार अथवा निकट बौद्धिक समूहपर केन्द्रित संकलन सेहो मिथिलाक विस्तृत साहित्यिक इतिहासमे योगदान कऽ सकैत अछि। शर्त ई जे स्मृति, अभिनन्दन, साक्षात्कार, आलोचना आ अभिलेखक दावा अलग पहचानल जाए। ‘सेतु’ तखने मजबूत अछि जखन आत्मीयताक संग बाहरी असहमतिमूलक प्रवेश सेहो सम्भव रहय।

08. ‘सेतुषाम : Vibrant Maithili’ : प्रतिनिधित्व आ सांस्कृतिक सार्वजनिकता

छठम समीक्षामे ‘सेतुषाम’ एकटा सामूहिक साहित्यिक-सांस्कृतिक संकलनक रूपमे पढ़ल गेल अछि। गजेन्द्र चित्रकथा, बालसाहित्य, कोश, पञ्जी, भाषिक बहुलता, पत्रिकाक सम्पादन, अभिलेखन आ डिजिटल संसाधनक साझा परिप्रेक्ष्य बनबैत छथि। एहि अध्ययनक मुख्य तर्क अछि जे साहित्यक सामाजिक अस्तित्व पुस्तक लिखबाक बाद समाप्त नहि होइत; ओ प्रकाशन, वितरण, मञ्च, प्रशिक्षण आ पुनर्पाठक श्रमसँ दीर्घजीवी होइत अछि। परम्परागत साहित्येतिहासक लेखक-सूचीमे ई अदृश्य श्रम प्रायः कम ठाम पबैत अछि।

प्रीति ठाकुरक चित्रकथा सम्बन्धी लेखसभ आ गजेन्द्रक सांस्कृतिक उद्यमपर लिखल लेखसभक आकार असमान अछि। ई असमानता केवल पृष्ठ-गणनाक प्रश्न नहि; संकलन स्त्री-सृजन आ संस्थागत संरचनाक बीच प्रतिनिधित्व केहन बनबैत अछि, से पूछबाक अवसर अछि। ‘समावेशी इतिहास’ शीर्षक तबे सार्थक होयत जखन भिन्न पीढ़ी, क्षेत्र, जातीय स्थिति आ असहमत रचनाकारक आवाज उपस्थित हो। गजेन्द्र एहि दिशामे सार्थक प्रश्न रखैत छथि, किन्तु पूर्ण प्रतिनिधित्वक दावा बाहरी तुलना बिना नहि बनैत।

‘सेतुषाम’ आ ‘प्रीति कारण सेतु बान्हल’ दूनूमे अनेक साझा व्यक्ति आ सांस्कृतिक प्रश्न उपस्थित छथि; तथापि दूनूकेँ समान पोथी मानि देब गलत। पाठसंग्रहक परिवर्तन, आलेखक नवा अनुक्रम आ नामक अर्थ जाँचि दूनू संकलनक स्वतन्त्र सम्पादकीय हस्तक्षेप चिन्हल जाय। एतय गजेन्द्रक आलोचनाकेँ एक परस्पर-पाठीय मानचित्रक रूपमे देखल जा सकैत अछि।

09. ‘अनचिन्हार आखर’ : गजल, रुबाइ आ कताक अलग स्वरूप

सातम समीक्षासँ पुस्तक गजल-सृजनक विशेष जगतमे प्रवेश करैत अछि। ‘अनचिन्हार आखर’मे गजल, रुबाइ आ कता उपस्थित अछि। गजेन्द्र बहर, रदीफ-काफिया, लय आ मैथिली भाषाक बोलचालक संग-संग भूख, राजकाज, अन्हार, प्रेम आ सामुदायिक चिन्ताकेँ पढ़ैत छथि। ई पद्धतिक सबल पक्ष अछि जे छन्दकेँ केवल नियमक सूची नहि, काव्यानुभवक आयोजन मानैत अछि। ‘सपनाक भात’ सन बिम्ब सामाजिक भूखकेँ विचार-वाक्यसँ सघन साहित्यिक प्रसंगमे बदलैत अछि; मुदा प्रत्येक राजनीतिक घोषणाकेँ एहन रूपान्तरण भेटल हो, से स्वतः नहि मानल जा सकैत।

गजलक शेर अपन सीमित आकारमे अर्थक बहुस्तर निर्मित करैत अछि। गजेन्द्र जखन एकहि रदीफक पुनरावृत्ति आ नव अर्थक बीच सम्बन्ध खोलैत छथि, तखन वास्तविक काव्यसमीक्षा होइत अछि; जखन मात्र कथ्यक प्रशंसात्मक पुनरुक्ति रहैत अछि, तखन सौन्दर्यपरक परीक्षण शिथिल पड़ैत अछि। रुबाइक चारि पाँतिक तर्कात्मक समापन आ कताक भिन्न

अन्तर्गत बन्धक अनदेखी कए सभकेँ सामान्य ‘गजल’ कहब विधागत भूल होयत। एहि भेदक स्वीकृति समीक्षा लेल आवश्यक अनुशासन अछि।

10. ‘जंघाजोड़ी’ : छन्दक कठोरता आ व्यङ्ग्यक जोखिम

आठम अध्ययनमे दू सय गजलक संग्रह ‘जंघाजोड़ी’क वैचारिक ऊर्जा विशेष मुखर अछि। पुस्तकमे मात्राक्रम अथवा बहरसम्बन्धी सूचना जोड़ल जाएबाक उल्लेख गजेन्द्रक समीक्षामे अछि। औपचारिक अनुशासन आ सत्ता-विरोधी कथ्यक टकराहट एहि ग्रन्थक मूल सौन्दर्यात्मक सम्भावना थिक। “जे हमरा लेल विपदा अछि / से हुनका लेल सुविधा अछि” जेकाँ विरोधी पंक्तिक अर्थ सामाजिक स्थिति बदललासँ बदलैत अछि। रूपक संक्षिप्तता अनेक ठाम दृष्टान्तकेँ तीक्ष्ण बनबैत अछि।

मुदा व्यङ्ग्यक तीक्ष्णता आ साहित्यिक गहराई स्वतः समानार्थी नहि। राजनीतिक नारा शेरमे आबि सकैत अछि, मुदा सफल शेर नाराक भीतर अप्रत्याशित अर्थ, विराम वा विडम्बना जगबैत अछि। देह, स्त्री, धर्म, श्रम आ वर्गसम्बन्धी शेरसभमे बोलबाक अधिकार ककरा भेटैत अछि आ कोन छवि रूढ़ बनि जाइत अछि, से सेहो पूछबाक चाही। गजेन्द्रक विवेचन अभिव्यक्तिक जनपक्षधरता लेल सजग अछि, पर स्त्री-दृष्टि आ सामाजिक प्रतिनिधित्वक असमानता अतिरिक्त पाठविश्लेषण माँगैत अछि।

छन्दसूचना पाठककेँ परीक्षणक साधन दैत अछि; ओकर स्वयं उपस्थित रहब शुद्धताक प्रमाण नहि। उच्चारणक भिन्नता, विराम आ गाइकीक गति बदललासँ मात्राक्रमक व्यावहारिक अनुभव बदलि सकैत अछि। एकाधिक पाठकद्वारा उदाहरणक पुनर्परीक्षण आलोचनात्मक निर्णयकेँ अधिक दृढ़ बनाओत।

11. ‘कुमारि इच्छा’ : स्त्री-अनुभूति, भूख आ छन्दक दाबी

नवम समीक्षाक केन्द्रीय पदार्थ ‘कुमारि इच्छा’क सय गजल अछि। शीर्षक एक अधूर आकांक्षाक सांस्कृतिक संकेत अछि; संग्रहमे माँड़, नोन, सिन्दूर, वैवाहिक अपेक्षा, भूख, नदी आ श्रमक उपस्थिति गजेन्द्रक अनुसार सामाजिक अनुभवकेँ काव्यरूप दैत अछि। ‘बेटी’ आ

‘सासुर-नैहर’ सम्बन्धी शेरक उल्लेखसँ स्त्रीजीवनक दोहरी मर्यादाक प्रश्न उठैत अछि। मुदा स्त्री विषयपर लिखल कविता आ स्त्रीक स्वतन्त्र अनुभव-स्वर एक नहि; शेरक बोलनिहार ककरा बनाओल गेल अछि, से स्पष्ट करब आलोचनाक दायित्व अछि।

गजेन्द्र छन्दक नव नामकरण वा विशिष्ट मात्रिक प्रस्तावपर सावधानी व्यक्त करैत छथि। छन्दक नाम प्रस्तुत करब सर्जनात्मक प्रयोगक सूचना अछि, किन्तु ओकर नवता प्रमाणित करबाक लेल पूर्वस्वीकृत बहरसँ तुलना, उच्चारणक नियम, स्वतन्त्र तकतीअ आ पाठकीय पुनरुत्पादन आवश्यक अछि। एहि अन्तरकें खुलल राखल जाए तँ प्रयोगकें सम्मान भेटैत अछि, शास्त्रकें समयपूर्व अन्तिमता नहि।

संग्रहक व्यङ्ग्य कतहु भूख आ असमानताकें प्रखर दृश्य दैत अछि, कतहु प्रत्यक्ष उपदेशक रूप ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्रक समीक्षामे ई भेद रहबाक कारण आलोचना सन्तुलित होइत अछि; आगूक प्रश्न ई अछि जे कोन शेर पाठककें अनेक अर्थक सम्भावना दैत अछि आ कोन शेर पहिने सँ निश्चित नैतिक उत्तर सुनबैत अछि।

12. ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’ : अभ्यास-पुस्तकक मर्यादा

दसम समीक्षामे रचनात्मक गजलसँ हटि शास्त्रीय अभ्यासक क्षेत्र आरम्भ होइत अछि। ‘मैथिली गजलक रेडी रेकोनर’क पाँच खण्ड बहर, रुक्न, काफिया, रदीफ, विभक्ति आ उच्चारण-सम्बन्धी व्यावहारिक जिज्ञासाक मार्गदर्शन करबाक प्रयत्न करैत अछि। ‘Ready Reckoner’ नाम स्वयं संक्षिप्त उपयोग-पुस्तकक संकेत अछि; एकरा सम्पूर्ण काव्यदर्शनक अन्तिम ग्रन्थ बनाकऽ परखब अनुचित होयत। गजेन्द्रक समीक्षाक गुण एहि विधागत अपेक्षाक स्पष्टतामे अछि।

मैथिलीमे विभक्ति, संयुक्ताक्षर, रेफ, चन्द्रबिन्दु आ स्वाभाविक ध्वन्यात्मक संकोचक कारण मात्रागणनाक नियमकें यान्त्रिक रूपें उर्दू वा हिन्दी उदाहरणपर लागू करब समस्यापूर्ण हो सकैत अछि। लेखकक स्थानीय नियम-चिन्तन महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा अपवादक आधार, बोलचालक क्षेत्रीय भेद आ नियमक लागू होबाक सीमा साथमे देल जाए तँ अभ्यास-पुस्तक

अधिक विश्वसनीय होयत। एकहि उदाहरणक मान्य आ अमान्य पाठ सोझाँ रखबाक पद्धति विवादकें निर्णययोग्य बनबैत अछि।

संक्षिप्तता एहि ग्रन्थक शक्ति आ सीमा दूनू अछि। अति संक्षिप्त विधान नव पाठकक लेल सहज होइत अछि, मुदा आलोचनात्मक असहमतिक आधार लुप्त करि सकैत अछि। गजेन्द्र जे आत्मसंशोधनक उपस्थिति देखबैत छथि, ओ शास्त्र निर्माणकें जीवित प्रक्रियाक रूपमे बुझबाक महत्त्वपूर्ण संकेत अछि।

13. 'मैथिली गजलक व्याकरण ओ इतिहास' : विधान इतिहासकें कोना चुनैत अछि

एगारहम पोथीक समीक्षा चौदह अध्ययनमे शास्त्रीय स्तरपर सर्वाधिक व्यापक चर्चा प्रस्तुत करैत अछि। पचीस खण्डमे बहर, काफिया, रदीफ, शेर, मतला, मकता, भाषाक ध्वनि, सम्पादकीय व्यवहार आ इतिहासक प्रसंग एकत्र अछि। गजेन्द्रक केन्द्रीय प्रश्न उचित अछि : जँ नियमक आधारपर 'वैध गजल' निर्धारित होयत, तँ इतिहासमे किनकर रचनाकें गजल कहल जाएत, से नियम पहिने सँ तय करि देत। व्याकरण तखन निष्पक्ष वर्णन नहि रहैत, साहित्येतिहासक चयन-प्रक्रियामे सक्रिय शक्ति बनैत अछि।

“गजलक किछु नियम भाषा सापेक्ष अछि” सन सूत्र भाषिक स्वायत्तताक उपयोगी आधार अछि। पर भाषा सापेक्षताक अर्थ मनमाना छूट नहि; मैथिली ध्वनिक वास्तविक व्यवहार, क्षेत्रीय भिन्नता, पाठक-द्वारा जाँचल जा सकय योग्य गणना आ स्वीकृत अपवाद चाही। अपन भाषिक नियमक आग्रहक संग एकटा मात्र शुद्ध साहित्यिक रूपक दावा, सम्भावित अन्तर्विरोध पैदा करैत अछि। गजेन्द्र एहि वैचारिक तनावकें समुचित ढंगसँ रेखांकित करैत छथि।

इतिहासमे 'पहिल', 'पूर्ववर्ती', 'पूर्ण गजल-संग्रह', 'छन्दसम्मत' आ 'गजल कहाएल रचना' भिन्न श्रेणी अछि। हुनका एकहि कालक्रममे बिना परिभाषाक राखलासँ विवाद वस्तुगत कम, संज्ञात्मक बेसी बनि जाइत अछि। इतिहासक एकाधिक प्रवाह, महिला आ मुसलमान गजलकार, नेपालक मैथिली, लोकधुन आ भाषिक प्रयोगक स्थान तय करब ग्रन्थक आगामी संस्करण लेल आवश्यक अछि।

14. 'सन्दर्भ सहित' : आलोचनात्मक न्याय आ विधागत सीमा

बारहम पोथी सात प्रमुख आलोचनात्मक आलेखक संकलन अछि। गजेन्द्रक चर्चा बैकुण्ठ झाक संग्रह, कमलमोहन चुन्नूक भूमिका, काज्जीनाथ झा 'किरण', अरविन्द ठाकुरक रूप-विवाद, रवीन्द्रनाथ ठाकुरक कथित गजल आ साहित्यिक वक्तव्यक अन्य उदाहरणक माध्यमसँ गजलक विधानपर केन्द्रित अछि। प्रसिद्धि वा संकलनक मुखपृष्ठ 'गजल' लिखि देलासँ रचना स्वतः विधागत परीक्षणसँ मुक्त नहि होइत—ई आग्रह साहित्यिक तर्कक गम्भीर आधार अछि।

तथापि कोनो रचनाकेँ शास्त्रीय गजल नहि मानब आ ओकरा सफल कविता नहि मानब दू अलग निर्णय अछि। काफिया अथवा बहरक त्रुटि चिन्हित करबामे स्पष्ट तकनीकी उदाहरण उपयोगी होइत अछि; किन्तु ओकर बाद रचनाक बिम्ब, आत्मस्वर, व्यङ्ग्य आ भाषा-मूल्य अलग देखल जाय। विवादमे विरोधी मतक सबसे मजबूत रूपक निष्पक्ष पुनर्स्थापना अनिवार्य अछि। निन्दात्मक विशेषण तर्कक स्थान लैत अछि तँ कृतिक दोषो स्पष्ट नहि रहैत।

गजेन्द्रक समीक्षा एहि संकलनकेँ प्रशस्ति-विरोधी आलोचनात्मक साहसक रूपमे देखैत अछि, पर 'नियमक अधिकार'क संग 'सुनबाक उत्तरदायित्व' जोड़बाक आग्रह सेहो करैत अछि। एहि नैतिक विधिसँ विवाद व्यक्तिपर नहि, पुनः जाँचल जा सकय योग्य उदाहरणपर टिकत।

15. 'शब्द-अर्थ-शक्ति' : रूपक परीक्षण आ अर्थक अपूर्ण विस्तार

तेरहम समीक्षामे 'शब्द-अर्थ-शक्ति'क दू प्रमुख क्षेत्र देखाएल अछि : विशिष्ट गजल-संग्रह तथा शेरक आलोचना आ साहित्यिक संस्था, इतिहास तथा विधाक विवादपर लेख। गजेन्द्रक विचारानुसार बहर, काफिया, रदीफ आ उच्चारणक तर्कसंगत जाँच एहि पोथीक ठोस गुण अछि। 'पहिल' होयबाक दावा, अनुकूल भूमिका, शब्दप्रयोग आ गजल-आन्दोलनक श्रेयक सवालकेँ ओ सार्वजनिक आलोचनाक वैध विषय बनबैत छथि।

पुस्तकक नाम तीन अपेक्षा जगबैत अछि—शब्दक ध्वनि आ विन्यास, अर्थक व्यंजना, आ साहित्यिक प्रभावक शक्ति। वास्तविक विवेचनमे छन्दगत प्रमाणीकरण आ आलोचनात्मक

प्रतिवाद अपेक्षाकृत सघन देखाइत अछि; बिम्ब, ध्वनि-व्यंजना, विडम्बना आ पाठकक बहुअर्थी अनुभूतिक स्वायत्त विस्तार ओतबा लगातार नहि। ई सीमाक चिन्हांकन पुस्तकक उद्देश्य नकारब नहि, ओकर शीर्षकक व्यापक प्रतिज्ञा आ वास्तविक बलक बीच अन्तर देखब अछि।

शास्त्रीय विवादक इतिहासमे उद्धरण, संस्करण आ तिथि विशेष महत्त्वक अछि। गजेन्द्र जे विवादसंगत घटनाक्रम देल छथि, ओकरा प्राथमिक पत्रिकाइक, मूल समीक्षाक प्रकाशित रूप आ प्रतिवादक क्रमसँ फेर जाँचल जाए तँ साहित्यिक मतभेदक सच्चा इतिहास तैयार भऽ सकत। मात्र तर्क जीतबाक बदला आलोचनाक विधि सँवारब एतय अधिक स्थायी उपलब्धि होयत।

16. 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास' : 'पहिल'क दाबी आ डिजिटल प्रमाण

चौदहम समीक्षा डिजिटल साहित्यिक सार्वजनिकताक दिशि पुस्तककें विस्तृत करैत अछि। 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास'मे आरम्भिक जालस्थल, साहित्यिक ई-पत्रिका, समाचार-मञ्च, ब्लॉग, मिथिलाक्षर-युनिकोड, सामाजिक माध्यम, यूट्यूब आ विकिपीडियाक जाल एक समग्र परिवर्तनक कथा बनैत अछि। गजेन्द्र एहि विस्तारकें उचित महत्त्व दैत छथि, कारण डिजिटल मञ्चपर प्रकाशन लेखक, सम्पादक, प्राविधिक सहयोगी, पाठक आ अभिलेखकारक बहुस्तरीय सामूहिक श्रम अछि।

'भालसरिक गाछ', 'पल्लवमिथिला', 'समदिया', 'कतेक रास बात' आ 'विदेह' सन नाम आरम्भिक क्रमक प्रसंगमे आएल अछि। एहि नामसभक सापेक्ष प्राथमिकतापर चर्चा करैत चारि प्रश्न अलग राखब आवश्यक अछि : जालस्थल प्रथम कखन अस्तित्वमे आएल, मैथिली भाषामे सामग्री कखन प्रकाशित भेल, साइट वर्तमानमे कखनसँ पढ़ल जा सकैत अछि, आ अभिलेखीय प्रति कोन तिथिक उपलब्ध अछि। 'मैथिली-विषयक अंग्रेजी पृष्ठ' आ 'मैथिली भाषामे प्रकाशित समाचार' एकहि प्रमाण-श्रेणी नहि। गजेन्द्र एहि परिभाषात्मक प्रश्न उठबैत छथि; बिना स्वतन्त्र वेब-अभिलेख जाँचक इहाँ कोनो प्राथमिकता-क्रम अन्तिम घोषित नहि अछि।

डिजिटल अभिलेखक विशेष जोखिम अछि पृष्ठक संशोधन, डोमेन बदलनाइ, पूर्वदिनांकित सामग्री, मृत लिंक आ मञ्चक स्वामित्व-परिवर्तन। इतिहासलेखनमे समकालीन स्क्रीन-प्रतिलिपि, सुरक्षित अभिलेख-तिथि, मूल प्रकाशकक उल्लेख आ स्वतन्त्र सन्दर्भक सहयोग चाही। फेसबुकक प्रतिक्रिया-संख्या अथवा यूट्यूबक दृश्यगणना सामाजिक प्रभावक एक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा पत्रकारिताक सत्यता वा साहित्यिक गुणवत्ता स्वतः नहि सिद्ध करैत।

पत्रकारिताक परिभाषाकेँ समाचार-प्रधान मञ्चधरि सीमित नहि करब उचित अछि, मुदा प्रत्येक कविता वा निजी पोस्टक पत्रकारिता कहल जाएब सेहो विधागत भेद हरबैत अछि। सम्पादकीय उत्तरदायित्व, समय-सापेक्षता, तथ्यपरीक्षण आ जनहितक सम्बन्धी निर्णयसँ डिजिटल पत्रकारिताक विशिष्ट अस्तित्व स्पष्ट होयत।

17. सम्पादन आ सांस्कृतिक स्मृति : संरक्षणक भीतर चयन

पहिल छह समीक्षामे पुनः पुनः एकटा आधारभूत प्रश्न लौटैत अछि : बिखरल सामग्रीकेँ एक पुस्तकमे आनब मात्र संग्रहण अछि कि इतिहासलेखन? संग्रहण बिना इतिहास अधूरा अछि, मुदा संग्रहण अपने इतिहासक निष्कर्ष नहि। ‘समग्र’ नाम पूर्णता चाहैत अछि, जखन अधिकांश सम्पादकीय प्रयत्न उपलब्ध पाण्डुलिपि, पत्रिका, साक्षात्कार आ स्मृतिक अपूर्ण संसारसँ बनैत छथि। तें प्राप्त सामग्री, अनुपलब्ध सामग्री, सम्पादकीय संशोधन आ मूल प्रकाशनक अन्तर प्रकाशित रूपमे स्पष्ट रहनाइ चाही।

गजेन्द्रक समालोचना संरक्षणक श्रमकेँ मान्यता दैत अछि। एहि परियोजनामे संस्थाक स्वयं-लिखित इतिहास आ स्वतन्त्र मूल्याङ्कनक अन्तर सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। आयोजकक संस्मरण, लेखकक आत्मपरिचय, प्रशंसात्मक आलेख आ प्रत्यक्ष मुद्रित प्रति अलग साक्ष्य-प्रकार अछि। प्रत्येक स्रोतक वैध उपयोग अछि, मुदा ओकर प्रमाण-क्षमता समान नहि। ई अन्तर स्पष्ट होयब एहन साहित्येतिहासक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि जाहिमे संस्था आ साहित्यकार एक-दोसराकेँ प्रतिष्ठा प्रदान करैत छथि।

18. कथा-समीक्षा : पाठक बहुअर्थिता आ सामाजिक न्याय

नबोनारायण मिश्रक कथा आ गजेन्द्रक चयनित कथामे पारिवारिक सम्बन्ध, दहेज, ग्रामीण सत्ता, प्रवास, बालदृष्टि, श्रम आ संस्थागत कठोरताक भिन्न विधागत रूप देखल जा सकैत अछि। एकहि सामाजिक विषयपर लिखल दू कथा सममूल्य नहि होइत। ‘आदर्श विवाह’ सन नैतिक निर्णयप्रधान कथामे समाधान स्पष्ट रहि सकैत अछि, जखन ‘युगधर्म’क मौन पाठककें अधिक अर्थनिर्माणक जगह दैत अछि। एहन तुलनासँ कथाक उद्देश्य आ कथात्मक सघनताक अन्तर खुलैत अछि।

कथा सामाजिक साक्ष्यक रूपमे उपयोगी अछि, मुदा कथाकारक कल्पना कोनो न्यायालयी बयान नहि। जाति अथवा स्त्री-सम्बन्धी पात्रक कथनकें लेखकक प्रत्यक्ष मत मानब खतरनाक सरलीकरण अछि; उलटे कथा-पात्रक स्थिति आ वाचकक दूरी नहि देखलासँ वास्तविक पूर्वाग्रह सेहो ओझराइत अछि। आलोचना लेल पात्रक अधिकार, मौनक अर्थ, कथान्तक खुलापन आ सामाजिक संस्थाक प्रतिनिधित्वपर पाठगत विवरण आवश्यक अछि। गजेन्द्रक अधिकांश सफल कथा-पाठ एहि दिशामे भेटैत अछि।

19. मैथिली गजल : विधानकें आवश्यक, पर्याप्त नहि मानब

सातसँ तेरह धरि समीक्षामे गजलशास्त्र बड़ सघन विषय बनैत अछि। गजलक शेर, बहर, मतला, मकता, रदीफ आ काफिया एक पहचानयोग्य शिल्प बनबैत अछि। ई शब्दावली स्पष्ट भेला बिना गजलक नामपर लिखल प्रत्येक तुकान्त रचनाकें एकहि विधामे राखब सम्भव नहि। गजेन्द्र एहि विशिष्ट विधानक महत्त्व ठीक प्रकारें स्वीकार करैत छथि।

किन्तु शिल्पगत प्रमाण सम्पूर्ण मूल्याङ्कनक अन्तिम सोपान नहि। छन्दसम्मत रचना अर्थक स्तरपर सपाट भऽ सकैत अछि, आ विधागत रूपसँ विवादित कविता बिम्ब आ अनुभवमे प्रभावशाली भऽ सकैत अछि। अतः त्रिस्तरीय निर्णय उपयुक्त अछि : एक, रचना निर्दिष्ट विधाक कसौटीपर कोन स्थिति रखैत अछि; दू, रचनाक भाषा आ सौन्दर्य कतेक सक्षम अछि;

तीन, ओकर सामाजिक दृष्टिक विस्तार आ सीमा की अछि। एहि विभाजन बिना तकनीकी दोषक निर्णय नैतिक अवमूल्यन बनि जाएत।

गजलक उर्दू-पारसी-परम्परासँ सिखनाइ आ मैथिलीक स्वतन्त्र उच्चारणविधि अपनायब परस्पर विरोधी नहि; मुदा नवा स्थानीय छूटक तर्क उदाहरणसँ जाँचल जा सकय योग्य होयबाक चाही। नियम आ रचनात्मक प्रयोगक संवाद चलैत रहब साहित्यिक विधाक जीवनक संकेत अछि।

20. उच्चारण, बहर आ प्रमाण : परीक्षणक व्यावहारिक रूप

गजलक समीक्षामे बारम्बार प्रयुक्त ‘गलत काफिया’, ‘मात्राक्रम’, ‘बहर’ अथवा ‘नव छन्द’ सन निष्कर्ष लेल एक स्थिर उदाहरण-विधान उपयोगी होयत। पहिने पाठक प्रकाशित मूल पाँति; तकर बाद स्वीकृत उच्चारण; फेर प्रस्तावित मात्राविभाजन; तखन सन्दर्भित नियम आ सम्भावित वैकल्पिक पाठ। कएटा पाठक स्वतन्त्र रूपेँ ई क्रम दोहरा सकथि तँ निष्कर्ष मजबूत होयत। मैथिलीक क्षेत्रीय ध्वनिभेदक कारण एकमात्र लेखकक सहज उच्चारणकें सार्वभौमिक बनायब उचित नहि।

एहि पद्धति साहित्यिक मतभेदकें व्यक्तिगत विवादसँ निकालि सार्वजनिक परीक्षणमे अनैत अछि। प्रतिवादक उत्तर ‘ई गजल नहि’ कहि देबासँ पूर्ण नहि होइत; कोन कसौटीपर नहि, आ कोन कसौटीपर प्रभावी अछि, से साफ-साफ बताओल जाय। गजेन्द्रक अध्ययनसभमे नियम आ साहित्यिक उदारताक ई समन्वय एक महत्त्वपूर्ण विषय बनि उभरैत अछि, यद्यपि सभ ठाम समान विस्तार नहि।

21. वेब, पत्रिका आ भाषिक सार्वजनिक क्षेत्र : बदलैत माध्यम

सम्पादकीय संग्रहसभमे मिथिला आन्दोलनक मुद्रित पत्रिका आ अन्तिम समीक्षामे वेब-पत्रकारिताक मञ्च—ई दू अध्याय सतहपर अलग देखाइत अछि, मुदा दुनूकें जोड़निहार तथ्य पाठकक निर्माण अछि। कोलकाताक सांस्कृतिक आयोजन, लघुपत्रिकाक छपाई आ

आरम्भिक वेबसाइटक तकनीकी साधन भिन्न रहल, मुदा मैथिलीमे संवादक स्वायत्त सार्वजनिक स्थान बनायब साझा उद्देश्य रहल अछि।

डिजिटल सामग्रीक बहुलता सार्वजनिक संवादक गारण्टी नहि। वेबसाइटक निरन्तरता, सम्पादकीय निर्णयक पारदर्शिता, लेखकक श्रेय, बहुभाषिक पहुँच, अलग क्षमता-वला पाठकक सुविधा आ स्रोत सुधारबाक व्यवस्था महत्त्वपूर्ण अछि। मैथिली वेब इतिहासक पूर्ण साहित्येतिहास बनबाक लेल केवल ‘सबसे पहिल’ साइटक विवादसँ आगाँ बढ़ि वास्तविक पाठक, पहुँच-साधन आ प्रकाशनक बदलैत सामाजिक अर्थक परीक्षण करबाक चाही। गजेन्द्र एहि दिशामे मार्ग खोलैत छथि, मुदा अंकित प्रत्येक तथ्यक बाहरी सत्यापन आगूक काम अछि।

22. चारि विषयगत खण्डक बीच साझा वैचारिक सूत्र

पहिल खण्ड सम्पादनक इतिहास, दोसर गजलक रचनात्मक प्रयोग, तेसर गजलक नियम-समालोचना आ चारिम डिजिटल पत्रकारिताक इतिहास प्रस्तुत करैत अछि। एहि विभाजनकै यान्त्रिक कोष्ठक नहि मानल जाय। सम्पादकीय निर्णय साहित्यिक छविक निर्माण करैत अछि; रचनात्मक काव्य नियमसँ संवाद करैत अछि; शास्त्रीय नियम इतिहासक चयन प्रभावित करैत अछि; डिजिटल माध्यम कृति, आलोचना आ ऐतिहासिक अभिलेखक प्रसारक स्थिति बदलैत अछि।

गजेन्द्रक समेकित प्रयासक बल एहि आपसी सम्बन्धपर अछि, मुदा चारि खण्ड बीचक अन्तर्विरोध सेहो विचारणीय अछि। एक दिस साहित्यिक प्रवेशक लोकतान्त्रिक विस्तारक आग्रह, दोसर दिस गजल-विधानक कठोर सीमांकन; एक दिस स्मृतिक भावात्मक उपयोग, दोसर दिस डिजिटल इतिहासमे प्रामाणिक तिथिक आग्रह। ई विरोधाभास आवश्यकतया दोष नहि; ई अलग अध्ययन-वस्तुक अलग सिद्धान्तक तनाव थिक। आलोचना एहि तनावकें मेटाएब नहि, उचित नाम आ सीमा देब अछि।

23. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचनाक उपलब्धि

समग्र चौदह समीक्षाक प्रमुख उपलब्धि विधागत भेदक पहिचान अछि। गजेन्द्र साक्षात्कारक कहानी, सम्पादकीय संकलनक मौलिक ग्रन्थ, गजलक रूपशास्त्रक सामाजिक प्रभाव आ वेबपत्रकारिताक केवल ब्लॉग-सूची मानि एकमेक नहि करैत छथि। प्रमुख पुस्तकसभक रचनात्मक अथवा तर्कात्मक संरचना परिचित करब, प्रतिनिधि प्रसंग चिन्हब आ सकारात्मक उपलब्धिक संग जाँचयोग्य सीमा दर्ज करब हुनक अध्ययनक सार्थक गुण अछि।

दोसर उपलब्धि साहित्यक सामान्य पाठकक संस्था, सम्पादन, पाठ-संस्करण, भाषिक साधन आ डिजिटल अभिलेखक आलोचनात्मक मूल्यसँ परिचित करब अछि। एहि दायरेमे समालोचना केवल प्रसिद्ध लेखकक ऊँच-नीचक फैसला नहि रहैत; साहित्यिक संस्कृतिक निर्माण-प्रक्रियाक विषय बनबैत अछि। तेसर उपलब्धि अपन आधारग्रन्थसभक निर्विवाद प्रमाण मानबाक बदला स्मृति, लेखकक आत्मदावा आ स्वतन्त्र पुष्टिक अन्तरपर अनेक स्थानमे आग्रह अछि।

24. गजेन्द्र ठाकुरक समालोचनाक सीमा

एहि समग्रक पहिल सीमा विस्तार आ गहराईक अनुपातक प्रश्न अछि। चौदह पोथीक विषय अत्यन्त विविध अछि; कतहु ग्रन्थक आन्तरिक सूची आ प्रसंग-संचय दीर्घ होइत अछि, मुदा विशिष्ट पाँतिक निकट-पाठ अथवा तकनीकी उदाहरणक पुनर्गणना अपेक्षाकृत कम जगह पबैत अछि। विशेष रूपसँ गजल-विवादमे प्रत्यक्ष तकतीअ, स्रोतक मूल प्रति आ विरोधी मतक सूक्ष्म विवेचन परिणामक अधिक जाँचयोग्य बनबैत।

दोसर सीमा स्रोतक स्तरसभक मिश्रण हो सकैत अछि। प्रथम प्रकाशनक स्मृति, सम्पादकीय प्रस्तावना, स्वयं लेखकक तिथि-विवरण, उपलब्ध वेबसाइट आ स्वतन्त्र अभिलेख—ई सभ एक समान प्रमाण नहि। जँ संक्षेपणमे ई अन्तर स्पष्ट नहि रहय तँ पाठकक सोझाँ अनुमान निर्णीत इतिहास बनि सकैत अछि। तेसर सीमा लगातार ‘समावेश’, ‘समानान्तर इतिहास’ आ ‘जनपक्षधरता’ सन पदक उपयोगमे अछि; एहि पदसभक सामाजिक अर्थ जाँचबाक लेल

अनुपस्थित रचनाकार, असहमत पाठक आ बहिर्गत संस्थाक तुलनात्मक दृष्टि आवश्यक अछि।

एहि सीमासभकें निर्णायक दोष नहि, प्रस्तावित मूल्याङ्कनक पद्धतिगत शर्त मानल जायत। आलोचनाक सत्यनिष्ठा ओकरा प्रश्न-रहित बनबामे नहि, अपन सीमाक स्पष्ट बोधमे अछि।

25. आशीष अनचिन्हारक आत्म-संलग्नता : समीक्षकक जिम्मेवारी

एहि खण्डक समीक्षक-सम्पादक स्वयं गजेन्द्रक विवेच्य अनेक पोथीक लेखक अथवा सम्पादक छथि। तें अपन काजपर देल सराहनाक पुष्टि करब एतय उद्देश्य नहि। जँ गजेन्द्र कोनो शिल्पगत उपलब्धि देखैत छथि, ओकरा बिना स्वतन्त्र उदाहरणक अन्तिम निर्णय नहि कहल जायत; जँ ओ कोनो सीमा चिन्हैत छथि, ओकर उत्तर लेखकक मनोभावसँ नहि, प्रकाशित पाठमे उपलब्ध प्रमाणसँ देल जाए। आत्मीयता कृति सम्बन्धी जानकारीक पहुँच प्रदान करैत अछि, मुदा सहमतिक विशेषाधिकार नहि।

स्वतन्त्र आलोचनाक एकटा कसौटी ई सेहो जे समीक्षक अपन पुस्तकक सम्भावित दोषक सूची खुला रखय : संकलनमे प्रतिनिधित्वक असमानता, मूल संस्करणक सन्दर्भ-अपूर्णता, छन्ददावाक पर्याप्त परीक्षण, विवादमे भाषाक तीखापन, आ डिजिटल इतिहासक ‘प्रथम’ सम्बन्धी दावाक अभिलेखीय अनिश्चितता। एहि सबकें अस्वीकार करबाक बदला आगूक अध्ययन लेल व्यवस्थित कार्यसूची बनायब उचित होयत।

26. आगूक शोध लेल पाठ-सम्पादन आ प्रमाणक कार्यसूची

सम्पादकीय संकलनसभक सन्दर्भमे प्रत्येक रचनाक मूल प्रकाशन-वर्ष, पत्रिकाङ्क, लेखक-नाम, छद्मनाम, पाठभेद आ अपन-अपन अनुमति-विवरण एकत्र कएल जाए। व्यक्तित्व-संग्रहमे आलोचना, श्रद्धाञ्जलि, आत्मवक्तव्य आ साक्षात्कारकें पृथक साक्ष्य-चिह्न देल जाए। कथा-संग्रहमे मूल संस्करण आ चयनित पाठक तुलना करैत भाषाक परिवर्तन, कथाक क्रम आ सम्पादकीय हस्तक्षेप दाखिल होय। एहि काममे अनुपलब्ध सामग्री सेहो स्पष्ट दर्ज रहय।

गजलशास्त्रक लेल सार्वजनिक उदाहरण-संग्रह बनाओल जाए जाहिमे लिखित पाँति, सन्दर्भित बहर, मैथिली उच्चारणक भेद, मात्राविभाजन आ असहमत पुनर्पाठ एकसाथ सुरक्षित होय। डिजिटल इतिहासमे मूल यूआरएल, अभिलेखित प्रति, कैप्चर-तिथि, सामग्रीक भाषा, पुनर्प्रकाशनक चिह्न आ संशोधनक विवरण जेकाँ अभिलेखीय क्षेत्र अलग राखल जाए। दावा ‘प्रथम’ भेला पर प्रतियोगी श्रेणी आ प्रमाणक स्तर निर्दिष्ट करब अनिवार्य होय।

एहन कामक लाभ विवाद समाप्त करब नहि; विवादकें परीक्षणयोग्य बनायब अछि। मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास जँ लिखल जाय तँ ओकर मजबूती कथ्यक प्रतिरोध मात्र नहि, स्रोतक पारदर्शिता आ असहमत पाठक लेल खुलल पहुँचपर निर्भर करत।

27. समेकित निष्कर्ष

‘नित नवल आशीष अनचिन्हार’क गजेन्द्र ठाकुर लिखित चौदह समीक्षासभ मैथिली साहित्यिक संस्कृतिक बहुस्तरीय मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। नबोनारायण मिश्रक संस्थागत श्रमसँ आरम्भ कए अरविन्द ठाकुरक सम्पादित व्यक्तित्व-इतिहास, चयनित कथा, साहित्यिक सम्पादकीय, सामूहिक संकलन, गजलक काव्य-जगत, छन्दशास्त्रक सार्वजनिक विवाद आ अन्ततः डिजिटल पत्रकारिताक अभिलेखधरि पाठककें एक निरन्तर प्रश्न भेटैत अछि : साहित्यक अर्थ के रचैत अछि, के सुरक्षित रखैत अछि, आ के ओकर प्रमाणक जाँच करैत अछि?

गजेन्द्रक अध्ययनक मूल्य विषयक विस्तार मात्रमे नहि, वस्तुक अनुकूल मापदण्डक प्रयासमे अछि। एकर सीमा सेहो एतय स्पष्ट अछि जे विस्तृत पुस्तक-परिचयक बाद विशिष्ट दावाक स्वतन्त्र प्रमाण, विपरीत मत आ सूक्ष्म पाठपरीक्षणक अतिरिक्त स्थान बचल रहैत अछि। एहि पुनर्पाठक निर्णय न सम्पूर्ण स्वीकार अछि, न समग्र निषेध। इतिहास लेल स्मृति चाही मुदा स्मृति इतिहासक पर्याय नहि; कविता लेल छन्द उपयोगी अछि मुदा छन्द कविताक सम्पूर्ण अर्थ नहि; डिजिटल उपस्थितिक विस्तार महत्त्वपूर्ण अछि मुदा क्लिक अथवा तिथि स्वयं पत्रकारिताक गुणवत्ता नहि।

खण्ड ७० एकरूप प्रशस्ति-पुस्तक नहि, आलोचनाक उत्तरदायित्वक दस्तावेज बनबाक प्रयत्न अछि। साहित्यकें जीवित रखबाक लेल लेखक, सम्पादक, समीक्षक आ पाठकक परस्पर श्रम चाही; ओहि सम्बन्धमे असहमतिक अधिकार आ स्रोतक परीक्षणक अनुशासन बराबर जरूरी अछि।

28. आधारग्रन्थ आ पाठ-सीमा

मुख्य आधार : ठाकुर, गजेन्द्र। ‘नित नवल आशीष अनचिन्हार : चौदह पोथीक समेकित साहित्यिक आलोचना’। विदेह, २०२६। उपयोग कएल गेल प्रदत्त DOCX पाठमे चौदह समीक्षा चारि विषयगत खण्ड अन्तर्गत विन्यस्त अछि। एहि पुनर्पाठमे उल्लेखित मूल पोथीसभ सम्बन्धी जानकारी गजेन्द्रक समीक्षा-पाठक माध्यमसँ प्राप्त अछि।

पाठकीय सावधानी : मूल पोथीक स्वतन्त्र संस्करण, पत्रिकाङ्क, वेब-अभिलेख अथवा सम्बद्ध विवादक दस्तावेज ई प्रकाशन तैयार करैत काल बाहरी रूपेँ सत्यापित नहि कएल गेल। तें एहि खण्डक तर्कसभ गजेन्द्रक प्रकाशित आलोचनात्मक प्रतिपादनक मूल्याङ्कन अछि, चौदह मूल पोथीक सम्पूर्ण पुनर्समीक्षा नहि। प्रत्यक्ष पंक्तिक पुनर्मुद्रण सीमित राखल गेल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर समग्रक सम्पादकीय

खण्ड-७०

चौदह पोथीक स्वतन्त्र समेकित अध्ययन
सम्पादन, साहित्यिक स्मृति, कथा आ गजल-सृजन
गजलशास्त्र, भाषा-विवाद आ डिजिटल पत्रकारिता
मैथिली साहित्यक साक्ष्याधारित व्यापक विवेचन।

मूल पाठ □ विस्तृत आलोचना □ सम्पादकीय चयन



विदेह



विदेह डिजिटल संग्रह